

३६८५५

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

६९

पञ्चाङ्ग

# संस्कृत-निबन्धावलिः

( परिवर्धितं संशोधितञ्च पञ्चमं संस्करणम् )

सम्पादक

रामजी उपाध्याय

एम्. ए., डी. फिल्., डी. लिट्.

भू. पू. सीनियर प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

संस्कृत-विभाग : सागर विश्वविद्यालय, सागर



चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

## निबन्धानुक्रमिका

|                                                                     |    |
|---------------------------------------------------------------------|----|
| १. भारतवैयम् --- रामजी उपाध्यायः                                    | १  |
| २. संस्कृतगद्या कथमुपयुक्ता भवेत् --- रामावतार जर्मा                | ३  |
| ३. संस्कृतवृत्तपत्रोपयोगः --- अण्णा शास्त्री                        | १५ |
| ४. 'चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च --- रामकैलास पाण्डेयः    | १८ |
| ५. आदिकविर्वाल्मीकिः --- पुल्लेल रामचन्द्रदुः                       | २३ |
| ६. 'अहिंसा परमो धर्मः' --- रामजी उपाध्यायः                          | २८ |
| ७. 'बलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते' --- रामजी उपाध्यायः                 | ३२ |
| ८. 'न चातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति' --- रामजी उपाध्यायः         | ३५ |
| ९. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रेमि क्रमण' --- रामजी उपाध्यायः      | ३८ |
| १०. पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न सूखी हितकारकः --- रामजी उपाध्यायः       | ४२ |
| ११. सहसा विदधीत न क्रियाम् --- रामजी उपाध्यायः                      | ४५ |
| १२. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः --- रामजी उपाध्यायः     | ४६ |
| १३. 'स्वधर्मे निबन्धनं श्रेयः परधर्मो भयादहः' --- रामजी उपाध्यायः   | ५३ |
| १४. भारतीयसंस्कृतेर्वैशिष्ट्यानि --- रामजी उपाध्यायः                | ५७ |
| १५. काव्येष्वलंकारः --- विष्वक्ताय भट्टाचार्यः                      | ६२ |
| १६. कविः कालिदासः --- रामकैलास पाण्डेयः                             | ६६ |
| १७. श्रुतानां रामणीयकम् --- रामकैलास पाण्डेयः                       | ७१ |
| १८. 'उत्तमं हि धनं विद्या दीयमानं न हीयते' --- पुल्लेल रामचन्द्रदुः | ७६ |
| १९. सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् --- पुल्लेल रामचन्द्रदुः          | ८० |
| २०. विद्या ददाति विनयम् --- रामजी उपाध्यायः                         | ८५ |

|                                                                                |     |
|--------------------------------------------------------------------------------|-----|
| २१. सौन्दर्यबोधो ब्रह्मचर्यम् — रवीन्द्रनाथ ठाकुर                              |     |
| २२. आचारः परमो धर्मः — पुष्पलाल रामचन्द्रभट्टः                                 | १०  |
| २३. राष्ट्रिया संहतिः — विश्वनाथ भट्टाचार्यः                                   | ११  |
| २४. आचार्य-गौरवम् — रामजी उपाध्यायः                                            | १३  |
| २५. कर्मयोगः — रामजी उपाध्यायः                                                 | १०१ |
| २६. मोक्षः — रामजी उपाध्यायः                                                   | १०२ |
| २७. कविर्मनीषी — रामजी उपाध्यायः                                               | १०६ |
| २८. सुरगवी — शिवचन्द्र भट्टाचार्यः                                             | ११३ |
| २९. तस्माद् युध्यस्व भारत ! — रामजी उपाध्यायः                                  | ११५ |
| ३०. प्राधुनिक-शिक्षानीतिः — रामजी उपाध्यायः                                    | १२१ |
| ३१. संस्कृतं-जीवति वा न वा — रामजी उपाध्यायः                                   | १२५ |
| ३२. संस्कृत-विश्वविद्यालयः — रामजी उपाध्यायः                                   | १३३ |
| ३३. भारतराष्ट्रस्य भविष्यम् — राधाकृष्णन्, अनुवादको<br>विश्वनाथ भट्टाचार्यः    | १३७ |
| ३४. “कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी” — रामजी उपाध्यायः                     | १४१ |
| ३५. ‘सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण-प्रवृत्तयः’<br>रामजी उपाध्यायः | १४४ |
| ३६. गुणः पूजास्थानं गुणिषु — रामजी उपाध्यायः                                   | १५१ |
| ३७. विश्वशान्तेरुपायाः — रामचन्द्रभट्टः                                        | १५४ |
| ३८. ‘अन्नं बहु कुर्वति’ — रामचन्द्रभट्टः                                       | १५८ |
| ३९. वाक्यं रसात्मकं काव्यम् — रामचन्द्रभट्टः                                   | १६२ |
| ४०. अल्पव्ययता साधुः — रामचन्द्रभट्टः                                          | १६८ |
| ४१. वसुधैव कुटुम्बकम् — रामचन्द्रभट्टः                                         | १७२ |
| ४२. वसन्त-वर्णनम् — रामचन्द्रभट्टः                                             | १७६ |
| ४३. ‘सर्वं खल्विदं ब्रह्म’ — रामचन्द्रभट्टः                                    | १८० |

|                                                    |      |
|----------------------------------------------------|------|
| ४४. काजीपुरीयं प्रतिमानं निरयम्—गोपीनाथ कविनाथः    |      |
| ४५. वसुधैवा-सम्पादनं परमावयवम्—मित्रगोष्ठीतः       | १.८५ |
| ४६. अनेकान्तपादः—विष्णुगोस्वर मास्त्री             | १.९० |
| ४७. संस्कृतिः सन्तु परिपालनीया—रामजी उपाध्यायः     | १.९२ |
| ४८. 'जय जय भारतधननि'—रामजी उपाध्यायः               | १.९६ |
| ४९. देशरक्षा परो धर्मः—रामजी उपाध्यायः             | २.०० |
| ५०. संस्कृतज-जीवन-दिग्दर्शनम्—रामजी उपाध्यायः      | २.०४ |
| ५१. अन्तरं महदन्तरम्—रामजी उपाध्यायः               | २.०८ |
| ५२. सत्संगतिः—रामजी उपाध्यायः                      | २.१४ |
| ५३. भारते नारीणां प्रतिष्ठा—रामजी उपाध्यायः        | २.२० |
| ५४. दारिद्र्ये बहवो गुणाः—रामजी उपाध्यायः          | २.२४ |
| ५५. शङ्कराचार्यः—रामजी उपाध्यायः                   | २.३० |
| ५६. मित्रम्—रामजी उपाध्यायः                        | २.३६ |
| ५७. पुरा भारते सूत्राणां प्रतिष्ठा—रामजी उपाध्यायः | २.४० |
| ५८. भारतीयधार्मिक-सहिष्णुता—रामजी उपाध्यायः        | २.४५ |
| ५९. ग्रामजीवनम्—रामजी उपाध्यायः                    | २.५१ |
| ६०. संस्कृत-शिक्षणस्य बाधाः—रामजी उपाध्यायः        | २.५७ |
| ६१. संस्कृतं भारतीय-राष्ट्रियता च—रामजी उपाध्यायः  | २.६३ |
| ६२. संस्कृतिः संस्कुरुते साहित्यम्—रामजी उपाध्यायः | २.६८ |
| ६३. मेघदूतानुशीलनम्—रामजी उपाध्यायः                | २.७१ |
| ६४. दिल्ली-वैभवम्—रविशंकर नागरः                    | २.७६ |
| ६५. विमान-यात्रा—रामजी उपाध्यायः                   | २.८० |
| ६६. विदेशेषु संस्कृताध्ययनम्—रसिक बिहारी जोशी      | २.८४ |
| ६७. काव्यस्यात्मा ध्वनिः—रविशंकर नागरः             | २.८९ |
| ६८. संस्कृतज्योतिर्न ह्रापयेत्—अमरनाथ पाण्डेयः     | ३.०० |



६३. स्वप्नधीगम्यं जगत्—रामजी उपाध्यायः

४०८

६४. कविकर्मसमीक्षा—रामजी उपाध्यायः

४१०

६५. मनोबलम्—रामजी उपाध्यायः

४१३

